5. ध्वजः[28]

मंत्रादितोऽन्तपर्यन्तमन्ततश्चादिपर्यन्तं यदा क्रमपाठः क्रियते। तदा ध्वजपाठो भवति। अयं पाठः एकस्याः ऋचः वर्गस्य वा भवति। यथा-

(आदितः पाठः)	(अन्ततः पाठः)
१ ओषंधयः सं	२ पारयामसीतिं पारयामसि
३ सं वंदन्ते	४ राजन् पारयामसि
५ वदन्ते सोमैंन	६ तं रांजन्
७ सोमैंन सह	८ ब्राह्मणस्तं
९ सह राज्ञां	१० कृणोतिं ब्राह्मणः
११ राज्ञेति राज्ञां	१२ यस्मैं कृणोतिं
१३ यस्मैं कृणोतिं	१४ राज्ञेति राज्ञां
१५ कृणोतिं ब्राह्मणः	१६ सह राज्ञां
१७ ब्राह्मणस्तं	१८ सोमेन सह
१९ तं रांजन्	२० वदन्ते सोमैंन
२१ राजन् पारयामसि	२२ सं वंदन्ते
२३ पारयामसीति पारयामसिं	२४ ओषधयः सं

28. ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेद्यदि।
वर्गे वा ऋषि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः।।

Scanned with CamScanner

6. दण्डः[29]

आदौ मन्त्रादितः पदद्वयं गृहीत्वा क्रमपाठं कृत्वा तस्य विलोमपाठं कुर्यात्। पुनस्तयोरेव पदयोः क्रमपाठावसरेऽग्रिमं पदमेकं संयोज्य पाठं कुर्यात्। पुनः विलोमपाठं कुर्यात्। अनेनैवप्रकारेणैकैकं पदं गृहीत्वा पुनः समेषां क्रमपाठ-मनुलोमविलोमाभ्यां कुर्वन् मन्त्रार्धपर्यन्तमानयेत्। एतेन दण्डपाठो भवति। यथा-(मन्त्रपूर्वार्धस्य)

२ = ओषधयः सं।। समोषधयः।।

३ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सं ओषधयः।

४ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन वदन्ते समोषधः।

५ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह सोमेन वदन्ते समोषधः।

६ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञां। राज्ञां सह सोमेन वदन्ते समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञां। राज्ञेति राज्ञां।

उत्तरार्धस्य -

२ = यस्मैं कृणोतिं। कृणोति यस्मैं।

३ = यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं।

---

29. क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्चक्रममुत्तमम्।
अर्धर्चादेवमुक्तोऽयंक्रमदण्डोऽभिधीयते।।

४ = यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं।

५ = यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं रांजन्। राजस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं।

६ = यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं रांजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं।

यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं रांजन्। राजन् पारयामसि।। पारयामसीति पारयामसि।

7. रथः[30]

एकस्य पदोऽर्धर्चो वा पदद्वयं यत्र दण्डपाठविधिनोच्चार्यते स रथ उच्यते। रथस्त्रिविधः। द्विचक्रत्रिचक्रश्चतुश्चक्रभेदात्। तत्र द्विचक्ररथः पच्छोऽर्धर्चशः पठ्यते। यथा (अर्धर्चशः)

(1) द्विचक्रो रथः (अर्धर्चशः)

(पूर्वार्धः) (उत्तरार्धः)

(१) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (प्रथम एकपात्क्रमः)

समोषंधयः। कृणोति यस्मैं। (व्युत्क्रमः)

(२) (क) ओषंधयः सं। यस्मैं कृणोतिं। (द्वितीयो द्विपात्क्रमः)

(ख) सं वंदन्ते। कृणोतिं ब्राह्मणः। (द्वितीयो द्विपात्क्रमः)

वदन्ते समोषंधयः। ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं। (व्युत्क्रमः)

(३) (क) ओषंधयः सं। यस्मैं कृणोतिं। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

30. पादशोऽर्धर्चशोवापि सहोक्त्यादण्डवद्रथः।
आदिक्रमनयेदन्तं घनमाहुर्मनीर्षिणः।।

(ख) सं वंदन्ते। कृणोतिं ब्राह्मणः। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

सोमेन वदन्ते समोषधयः। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

(व्युत्क्रमः)

(४) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोतिं। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(ख) सं वंदन्ते। कृणोतिं ब्राह्मणः। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(घ) सोमेन सह। तं राजन्। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

सह सोमेन वदन्ते समोषधयः। राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै॥

(व्युत्क्रमः)

(५) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोतिं। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ख) सं वंदन्ते। कृणोतिं ब्राह्मणः। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(घ) सोमेन सह। तं राजन्। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ङ) सह राज्ञा। राजन् पारयामसि। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

राज्ञेति राज्ञा। पारयामसीति पारयामसि। (समाप्तिः)

मन्त्रद्वयं सहोक्त्यापि द्विचक्ररथो भवति। अस्मिन्पक्षेऽपि द्विविधः पाठभेदः। प्रथमस्तावदाद्यमन्त्रस्य (पदद्वयं गृहीत्वा क्रमेण पादान्तं यावत्) दण्डपाठविधिना पठित्वा ततो द्वितीयमन्त्रस्यापि तेनैव प्रकारेण पाठं कुर्यात् यथा–

(१) अग्निमीळे। अयं देवाय।

ईळेऽग्निं। देवायायं।

(२) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। अयं देवाय। देवाय जन्मने।

पुरोहितमीळेऽग्निं। जन्मने देवायायं।

(३) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। अयं देवाय।

देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। स्तोमो जन्मने देवायायं।

(४) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः।।

देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं।। विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं।।

(५) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देव। देवमृत्विजं।।

अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया।

ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायाय।।

(६) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। देवमृत्विजं।।

अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया। ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया।।

(७) होतारं रत्नधातमम्। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि।।

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातममिति रत्नऽधातम। रत्नधातम इति रत्नऽधातमः।।

द्वितीयप्रकारस्तु पर्यायेण पठ्यते। प्रथम मन्त्रस्य क्रमपाठं विधाय द्वितीस्यापि क्रमपाठं कुर्यात्। अथ विलोमपाठमपि प्रथमस्यादौ विधाय ततो द्वितीयस्य कुर्यात्। यथा-

(ऋ. १/१/१) (ऋ. १/२०/१)

(१) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय।।

(२) ईळेऽग्निं। देवायायं।।

(२) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय।।

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने।।

पुरोहिमीळेऽग्निं। जन्मने देवायायम्।।

(३) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय।।

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने।।

(३) पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः।

यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। स्तोमो जन्मने देवायायं।

(४) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय।।

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने।।

(३) पुरोहितं यज्ञस्यं। जन्मने स्तोमः।

'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।

(४) यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः।

Scanned with CamScanner

देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं॥

विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

(५) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय॥

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥

(३) पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः।

'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।

(४) यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः।

(५) देवमृत्विजं। विप्रेभिरासया॥

ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं।

आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

(६) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय॥

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥

(३) पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः।

'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।

(४) यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः॥

(५) देवमृत्विजं। विप्रेभिरासया॥

(६) ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया॥

(७) (१) होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥

रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि॥

Scanned with CamScanner

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातममिति रत्नऽधातमं।

रत्नधातम इति रत्नऽधातमः।।

त्रिचक्ररथः

यस्य मन्त्रस्य त्रिषु पादेषु समानपदानि भवन्ति तादृशस्य मन्त्रस्यैव त्रिचक्ररथपाठः सम्भवति। पूर्वं प्रतिपादादितः पदद्वयं गृहीत्वा समेषां क्रमपाठं कृत्वा ततस्तेषां विलोमपाठमपि कुर्यात्। पुनस्त्रयाणां पादानामादितः पदद्वयं गृहीत्वैव क्रमपाठं कृत्वा तत्पश्चात् संक्रमपाठं कुर्यात्। अथ क्रमशः विलोमपाठं कुर्यात्। तद्यथा–

प्रथमपादः द्वितीयपादः तृतीयपादः

(१) (१) विष्णोः कर्माणि। यतो व्रतानि। इन्द्रस्य युज्यः। (प्रथमः क्रमः)

कर्माणि विष्णोः। व्रतानि यतः। युज्य इन्द्रस्य। (व्युत्क्रमः)

(२) (१) विष्णोः कर्माणि। यतो व्रतानि। इन्द्रस्य युज्यः। (द्वितीयः क्रमः)

(२) कर्माणि पश्यत। व्रतानि पस्पशे। युज्यः सखा। (द्वितीयः क्रमः)

पश्यत कर्माणि विष्णोः। पस्पशे व्रतानि यतः। सखा युज्य इन्द्रस्य। (व्युत्क्रमः)

(प्रथमपादः) विष्णोः कर्माणि। कर्माणि पश्यत। पश्यतेति पश्यत। (समाप्तिः)

(द्वितीयपादः) यतो व्रतानि। व्रतानि पस्पशे। पस्पश इति पस्पशे। (समाप्तिः)

(तृतीयपादः) इन्द्रस्य युज्यः। युज्यः सखा। सखेति सखा। (समाप्तिः)

चतुश्चक्ररथः

अयं पाठश्चतुर्षु पादेषु समानपदयुक्तस्य मन्त्रस्यैव भवति। त्रिचक्ररथपाठस्य यो विधिरुक्त स एवात्राप्यनुगृह्यते। यथा–

Scanned with CamScanner

प्रथमपादः द्वितीयपादः तृतीयपादः चतुर्थपादः

(१) (१) ओषधयः सं। सोमेन सह। यस्मै कृणोति। तं राजन्।। (प्रथमक्रमः)

समोषधयः। सह सोमेन। कृणोति यस्मै। राजंस्तं। (व्युत्क्रमः)

(२) (१) ओषधयः सं। सोमेन सह। यस्मै कृणोति। तं राजन्।। (द्वितीयक्रमः)

(२) सं वदते। सह राज्ञा। कृणोति ब्राह्मणः। राजन्पारयामसि। (द्वितीयक्रमः)

वदते समोषधयः। राज्ञा सह सोमेन। ब्राह्मणः कृणोति यस्मै। पारयामसि राजंस्तं। (व्युत्क्रमः)

(प्रथमपादः) ओषधयः सं। सं वदते। वदत इति वदन्ते। (समाप्तिः)

(द्वितीयपादः) सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा।। (समाप्तिः)

(तृतीयपादः) यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मण इति ब्राह्मणः।। (समाप्तिः)

(चतुर्थपादः) तं राजन्। राजन्पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि। (समाप्तिः)

8. घनः[31]

घनो द्विविधः। घनः, घनवल्लभश्चेति। तत्र घनवल्लभोऽपि द्विविधः। तत्राद्यस्तावत् घनः क्रमपाठरीत्या मन्त्रान्तादादिपर्यन्तमानयेत्। आदितश्च तथैवक्रमेणान्तं नयेदेवायमेकः घनपाठः। यथा-

(1) पूर्वार्धस्य (अन्तादादिपर्यन्तम्)

(१) राज्ञेति राज्ञा। सह राज्ञा। सोमेन सह। वदन्ते सोमेन। स वदन्ते। ओषधयः सं- (आदितोऽन्तपर्यन्तम्).

सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा।

31. अन्तात्क्रमं नयेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्।
आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः।।

Scanned with CamScanner

(उत्तरार्धस्य (अन्तादादिपर्यन्तम्)

(२) पारयामसीति पारयामसि। राजन् पारयामसि। तं राजन्। ब्राह्मणस्तं। कृणोति ब्राह्मणः। यस्मै कृणोति- (आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि।

द्वितीयघनस्तु[32] शिखां पठित्वा तस्य विलोमं कृत्वा तत्रोक्तानि पदानि पुनः पठेत्। यथा-

(१)

शिखापाठः तस्य विपर्यासः तत्पदानां पुनःपाठः

ओषधयः सं समोषधय ओषधयः सं वदन्ते वदन्ते समोषधय ओषधयः सं वदन्ते।।

सं वदन्ते वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन।।

वदन्ते सोमेन सोमेन ~~वदन्ते~~ वदन्ते सोमेन सह सह सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह

सोमेन सह सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा राज्ञा सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा।

सह राज्ञा राज्ञा सह सह राज्ञा।। राज्ञेति राज्ञा।।

(२)

यस्मै कृणोति कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणः।।

32. शिखामुक्त्वा विपर्ययस्य तत्पदानिपुनः पठेत्।
अयं घन इति प्रोक्तः इत्यष्टौ विकृतीः पठेत्।।

कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं।।

ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् राजंस्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन्।।

तं राजन् राजंस्तं तं राजन् पारयामसि पारयामसि राजंस्तं तं राजन् पारयामसि।।

राजन् पारयामसि पारयामसि राजन् राजन् पारयामसि।। पारयामसीति पारयामसि।।

घनबल्लभोऽपि द्विविधः। क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः प्रथमः। स एव यदा अन्तादादि-पर्यन्तमादितश्चान्तपर्यन्तं तदा द्वितीयघनवल्लभ इत्युच्यते।

पञ्चसन्धिलक्षणम्

अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्क्रमोऽभिक्रमस्तथा।
संक्रमश्चेति पञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः॥

क्रमः = 1+2. 2+3। उत्क्रमः = 2+2, 3+3। व्युत्क्रमः =2+1, 3+2। अभिक्रमः = 1+1, 2+2। संक्रमः 1+2, 2+3।

क्रमः	उत्क्रमः	व्युत्क्रमः	अभिक्रमः	संक्रमः
१-२	२-२	२-१	१-१	१-२

ओषधयः सं। सं सं। समोषधयः। ओषधय ओषधयः। ओषधयः सं।
१ २ २ २ २ १ १ १ १ २

सं वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सं। सं सं। सं वदन्ते।
२ ३ ३ ३ ३ २ २ २ २ ३

वदन्ते सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सोमेन।

३ ४ ४ ४ ४ ३ ३ ३ ३ ४

सोमेन सह। सह सह। सह सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन सह।

४ ५ ५ ५ ५ ४ ४ ४ ४ ५

सह राज्ञा। राज्ञा राज्ञा। राज्ञा सह। सह सह। सह राज्ञा।

५ ६ ६ ६ ६ ५ ५ ५ ५ ६

राज्ञेति राज्ञा।

६ ६

'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि'[33] इत्यस्य पञ्चसन्धिः

तत्सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुस्तत्। तत्तत्। तत्सवितुः।

सवितुर्वरेण्यं। वरेण्यं वरेण्यं। वरेण्यं सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुर्वरेण्यं।

वरेण्यं भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो वरेण्यं। वरेण्यं वरेण्यं। वरेण्यं भर्गः।

भर्गो देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो देवस्य।

देवस्य धीमहि। धीमहि धीमहि। धीमहि देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य धीमहि।

धीमहीति धीमहि।

अत्र क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमाणां साम्प्रदायिकस्वरूपं व्युत्पाद्यते। तत्र क्रमोनाम पदपाठपठितानां शब्दानामादानविसर्गाभ्यां क्रमणम्। यथा-परा[34] मे। मे यन्ति। इत्यादि। उत्क्रमः - क्रमपाठस्योत्तरमेवपदं यत्र

33. ऋ. अ. 3/4/10 मं. 3/62/10

34. परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु।
इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।। ऋ. वे. सं. 125/16

Scanned with CamScanner

द्विरभ्यस्यते तदुत्क्रमः। यथा-परामे (इति क्रमः) मे परा इति-व्युत्पक्रमः।

अभिक्रमः

क्रमस्थपूर्वपदस्याभिमुख्येन द्विरभ्यसनमभिक्रमः। यथा-परा मे (इतिक्रमः) तत्पूर्वस्थपदं परा तस्य द्विरभ्यासः-'परा परा' इत्यभिक्रमः।

सङ्क्रमः

अभिक्रमपाठस्थपदेनसहोत्तरपदपठनं सङ्क्रमः। यथा-परा परा' इत्यभिक्रमः। परेति पदोत्तरवर्तमानं मे पदेन सह 'परा मे' इति रूपेण पठनं संक्रमः।[35]

क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः सम्वलितः पञ्चसन्धीत्यपरनामको घनपाठः सम्प्रदायविद्भिः प्रवर्तितः। सोऽयं पञ्सन्धियुक्तोघनपाठः[36] शाब्दिक-लोपागमवर्णविकारव्यापत्तिप्रकृतिभावादिसन्धिनियमैरसम्बद्धः पठ्यते। सन्धिसामान्यनियमैरेवसुबद्धः वैदिकसम्प्रदायप्रवर्तितक्रमोत्क्रव्युत्क्रमाभिक्रम-संक्रमाख्यपञ्चसन्धानसमयवद्धत्वादेवास्य पञ्चसन्धि-युक्तपाठस्तयोरेव जटादण्डाभ्यां पाठेन घनपाठः सिद्ध्यति। यथा-

(१) परा मे। मे मे। मे परा। परा परा। परा मे। परा मे, मे परा,

35. यद्यपि क्रमसंक्रमयोरुत्क्रमाभिक्रमयोश्च न कश्चन विशिष्टो भोदः सारुप्यात् तथापि सम्प्रदायकृद्भिर्यत्पृथक् लक्षणोपादानं पाठसिद्ध्यर्थम्। अनेन पञ्चसन्ध्याख्य लक्षणविशिष्टेन वेदपाठेन पदानामनुलोम विलोमपाठेऽपि पौर्वापर्य निश्चीयते। एतेन वेदाक्षराणां रक्षासुदृढा जायते। यदि कश्चित् कुत्रचिद्वेदमन्त्रेषु कमपि शब्दं प्रक्षिपति तर्हि तादृश प्रक्षिप्तशब्दस्य निष्कासनमासां विकृतिपाठेन तथैव भवति यथा तितउना पिष्टेभ्योऽपद्रव्यम्।
इमे पञ्चसन्धयोऽत्र वर्णिताः सन्ति। एतैः साकं घनपाठोऽपि भवति। जटापाठोऽपि।

36. अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्पक्रमोऽभिक्रमस्तथा।
सङ्क्रमश्चेतिपञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः।।

Scanned with CamScanner

परां मे।

(२) मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति। मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति।।

(३) यन्ति धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयः।। यन्ति धीतयो, धीतयो यन्ति, यन्ति धीतयः।।

(४) धीतयो गावः। गावो गावः। गावो धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो गावः।। धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावः।।

(५) गावो न। न न। न गावः। गावो गावः। गावो न।। गावो न, न गावो, गावो न।।

(६) न गव्यूतीः। गव्यूतीर्गव्यूतीः। गव्यूतीर्न। न न। न गव्यूतीः।। न गव्यूतीर्गव्यूतीर्न न गव्यूतीः।।

(७) गव्यूतीरनु। अन्वनु। अनु गव्यूतीः। गव्यूतीर्गव्यूतीः। गव्यूतीरनु।।

गव्यूतीरन्वनु। गव्यूतीर्गव्यूतीरनु।। अन्वित्यनु।।

(८) इच्छन्तीरुरुचक्षसं। उरुचक्षसमुरुचक्षसं। उरुचक्षसमिच्छतीः। इच्छन्तीरिच्छतीः। इच्छन्तीरुरुचक्षसं।।

इच्छन्तीरुरुचक्षसमुरुचक्षसमिच्छन्तीरिच्छन्तीरुरुचक्षसं। उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं।।

पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः

(घनवल्लभः)

पदद्वयस्य क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धिपाठो भवति। अनुलोमविलोमानुलोमैर्जटापाठो जायते। जटया सहोत्तरपदपाठेन शिखापाठो भवति। क्रममुत्तया, विपर्यस्य, पुनश्च क्रमपाठे कृते ध्वजो भवति।

Scanned with CamScanner

जटादण्डाभ्यां घनपाठः सिद्ध्यति। सर्वमेवैतत्पञ्चसंधियुते घनपाठे घनवल्लभे समुच्चयेन संगच्छते। पञ्चसंधियुतेन अन्तादादिपर्वतमादेरन्तपर्यन्तं च पाठेन द्वितीयो घनवल्लभः सिध्यति।

परां मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूंतीरनुं। इच्छन्तींरुरुचक्षंसम्।।[37]

(१) परां मे। मे मे। मे परां। परा परां। परां मे। परां मे, मे परा, परां मे। यन्ति मे, परा, परांमेयन्ति।

(२) मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति। मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति।। धीतयों, धीतयों यन्ति मे, मे यन्ति धीतयः।।

(३) यन्ति धीतयंः। धीतयों धीतयंः। धीतयों यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयंः।।

यन्ति धीतयों, धीतयों यन्ति, यन्ति धीतयों।।

गावो, गावों धीतयों यन्ति, यन्ति धीतयो गावंः।।

(४) धीतयो गावंः। गावो गावंः। गावों धीतयंः। धीतयों धीतयंः। धीतयो गावंः।।

धीतयो गावो, गावों धीतयो, धीतयो गावो न, न गावों धीतयो, धीतयो गावो न।।

(५) गावो न। न न। न गावंः। गावो गावंः। गावो न।। गावो न, न गावो, गावो न, गव्यूंतीर्गव्यूंतीर्नगावो, गावो न गव्यूंतीः।।

(६) न गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्न। न न। न गव्यूंतीः।। न गव्यूंतीर्गव्यूतीर्न न गव्यूंतीरऽन्व, ऽन्वऽनुगव्यूंतीर्न, न गव्यूंतीरनुं।।

(७) गव्यूंतीरनुं। अन्वनुं। अनु गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीरनु।।

---

37. ऋ. 1/5/16

Scanned with CamScanner

गव्यूतीरन्वऽनु। गव्यूतीर्गव्यूतीरनु।। अन्वित्यनु।।

(८) इच्छन्तीरुरुचक्षसं। ऊरुचक्षसमुरुचक्षसं। उरुचक्षसमिच्छन्तीः। इच्छन्तीरिच्छन्तीः। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।।

इच्छन्तीरुरुचक्षसमुरुचक्षसमिच्छन्तीरिच्छन्तीरुरुचक्षसम्।

उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसम्।।

एवं सम्पूर्णमन्त्रस्य घनपाठं कृत्वा ततो यदा मन्त्रान्तात्पञ्चसन्धियुक्तघनपाठं विधाय पुनरादेस्तेनैव प्रकारेणान्तपर्यन्तमानयेत्तदा द्वितीयो घनवल्लभो–जायते। अनेन प्रकारेणाष्टौ विकृतयः पठ्यन्ते।

संहितापाठः

↓

पदपाठः

क्रमः

(अष्टिविकृतयः)

1. जटा 2. माला 3. शिखा 4. रेखा 5. ध्वजः 6. दण्डः 7. रथः 8. घनः

क्रममाला पुष्पमाला

द्विचक्ररथः त्रिचक्ररथः चतुश्चक्ररथः

घनः घनवल्लभः

(क) शिखामुक्त्वाविपर्यस्यतत्पदानिपुनः पठेत्।

(ख) अन्तादादिपर्यन्तमादेश्चान्तपर्यन्तम्।